RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2022-24
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

गौतम बुद्ध

बाबा साहेब डा० अम्बेडकर

अक्टूबर-2021 | वर्ष - 13 | अंक : 09 | मूल्य : 5/-

संत कबीर दास

संत रविदास जी

घासीदास

बिरसामुण्डा

पेरियार रामास्वामी

छत्रपति शाहूजी महाराज

सन्त गाडगे

महात्मा ज्योतिबा राव फुले

नारायण गुरु

सावित्री बाई फुले

कांशीराम

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश : सुनीता धीमान, 414/12, शास्त्री नगर, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 9450871741
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय : 40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख कानपुर मण्डल : पुष्पेन्द्र गौतम, मल्हौसी, औरेया, उ.प्र. मो.: 9456207206
हरियाणा राज्य : डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : दिलीप कुमार कोसले, मो. : 09424168170
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001, मो. : 09887512360, 0144-3201516
चिरंजीलाल बैरवा (व्यावस्थापक) मेहरा आदर्श विद्या मन्दिर, भीम नगर कालोनी, राज भट्टा, दिल्ली रोड, अलवर, जिला-अलवर, मो.-09829855349
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय : ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020•IFSC CODE-SBIN0001784

अशोक विजयदशमी

orleku e n'kgj dk Lo:i

यह पर्व आश्विन मास की शुक्ल-पक्ष की दशमी को मनाया जाता है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार इसी दिन रामचन्द्र ने लंका पर चढ़ाई करके महाराजा रावण पर विजय प्राप्त की थी। अर्थात् राम ने रावण की हत्या की थी। विजयदशमी को राष्ट्रीय पर्व की मान्यता प्राप्त है। वैसे मुख्य रूप से यह हिन्दू वर्ण-व्यवस्था के आधार पर क्षत्रिय का त्योहार माना जाता है क्योंकि यहा वर्ण-व्यवस्था के आधार पर ही सब चीजों का बंटवारा निर्धारित है चाहे वह जन्म, कर्म हो या फिर रस्मो-रिवाज या त्योहार आदि ।

दशमी के दिन लगातार दस दिनों तक धमूधाम के साथ निकाली जाती है और रावण वध का प्रदर्शन होता है तथा मेले-तमाशे का आयोजन और दुर्गा पूजन होता है। उसी दिन हिन्दुओं के लिए नीलकठ पक्षी का दर्शन बड़ा शुभ माना जाता है।

n'kgj l tMh fgUnw ekU;rk,

दशहरे के सम्बंध में कही जाने वाली कुछ कथाएं इस प्रकार हैं-

1- एक बार पार्वती जी ने शंकर से पूछा कि ''लोगों में दशहरे का त्योहार प्रचलित है, इसका क्या फल है?'' तो शिवजी ने बताया कि ''आश्विन शुक्ल दशमी को सायंकाल में तारा उदय होने के समय 'विजय' नामक काल होता है जो सब इच्छाओं को पूर्ण करने वाला होता है। शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिए राजा को युद्ध के लिए इसी समय प्रस्थान करना चाहिए।'' इसकी पुष्टि हिन्दू ग्रंथ ज्योतिर्निबन्ध से भी होती है। इस दिन यदि श्रवण नक्षत्र का योग हो तो और भी शुभ है। रामचन्द्र जी ने इसी 'विजय-काल' में लंका के महाराजा रावण पर विजय पाई थी। इसलिए यह दिन हिन्दुओं के लिए बहुत बड़ी खुशी का पवित्र दिन माना जाता है। और क्षत्रिय लोग इसे अपना प्रमुख त्योहार मानते है क्योंकि रामचन्द्र भी क्षत्रिय थे।

हिन्दुओं की ऐसी मान्यता है कि शत्रु से युद्ध करने का प्रसंग न होने पर भी इस विजय-काल में राजाओं को अपनी सीमा का उल्लंघन अवश्य करना चाहिए । अपने तमाम दल-बल को सुसज्जित करके पूर्व दिशा में जाकर शमी वृक्ष का पूजन करना चाहिए । क्योंकि यह शमी वृक्ष सभी पापों को नष्ट करने वाला है तथा शत्रुओं को भी पराजय देने वाला है। इस वृक्ष ने अर्जुन के धनुष को धारण किया था और रामचन्द्र के लिए भी विजय की घोषणा की थी। पार्वती ने शमी वृक्ष के बारे में स्पष्टीकरण चाहा तो शिवजी ने उत्तर दिया ''दुर्योधन ने पांडावों को जुए में हराकर इस शर्त पर वनवास दिया था कि वे बारह वर्ष तक जैसे चाहें वैसे प्रकट रूप से वन में रह सकते हैं। लेकिन एक वर्ष बिलकुल अज्ञातवास में रहना होगा। यदि इस वर्ष में उन्हें कोई पहचान लेगा तो उन्हें बारह वर्ष और भी वनवास भोगना पड़ेगा। उस अज्ञातवास के समय अर्जुन अपना धनुष बाण इसी शमी वृक्ष पर रखकर राजा विराट के यहाँ बृहन्नला (हिजड़ा) के वेश में रहे थे। विराट के पुत्र कुमार ने गौओ की रक्षा के लिए बृहन्नला को अपने साथ लिया। शमी ने अर्जुन के शास्त्रों की रक्षा की थी और अर्जुन ने सही समय पर शस्त्र उठाकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी।''

विजय दशमी के दिन रामचन्द्र ने लंका पर चढ़ाई करने के लिए प्रस्थान करने के समय शमी वृक्ष ने कहा था कि आपकी विजय होगी। इसलिए उसी विजय काल में ही शमी वृक्ष की भी पूजा का महत्व है।

2- एक बार राजा युधिष्ठिर ने भी कृष्ण से विजयदशमी के बारे में पूछा तो कृष्ण ने बताया कि- ''हे राजन! विजयदशमी के दिन राजा को स्वयं अलंकृत होकर अपने दासों और हाथी, घोड़ों का श्रृंगार करना चाहिए तथा गाजे-बाजे के साथ मंगलाचरण करना चाहिए। उसे इस दिन अपने पुरोहितों को साथ लेकर पूर्व दिशा में प्रस्थान करके अपनी सीमा से बाहर जाना चाहिए और वहां शस्त्र-पूजा करके अष्टदिग्पालों तथा पार्थ देवता की वैदिक मंत्रों से पूजा करनी चाहिए। शत्रु की मूर्ति पुतला बनाकर उसकी दाती में बाण भेदना चाहिए तथा उसी समय पुरोहित से मंत्रों का उच्चारण करवाना चाहिए। ब्राह्मण की पूजा करके हाथी, घोड़ा, शस्त्र आदि का निरीक्षण करना चाहिए। यह सब क्रिया सीमान्त में करके अपने महल को वापस आना चाहिए जो राजा इस विधि से पूजन करके विजयदशमी की रस्म पूरी करता है वह सदा अपने शत्रु पर विजय प्राप्त करता है।'' हिन्दू धर्म में दशहरा (विजयदशमी) के लिए उपरोक्त प्रकार की मान्यताएं और कथाएं प्रचलित और मान्य हैं। किन्तु यह उनका अपना दृष्टिकोण है। जो हमने आपकी जानकारी के लिए उल्लेखित किया है।

okLrfodrk

आइए, अब हम दशहरे पर एक तर्कशील एवं बुद्धिवादी दृष्टिकोण रखते हुए उसके वास्तविकता स्वरूप को देखने-परखने का प्रयास करें।

भारत में दशहरे को हिन्दू लोग प्रायः दो तरीको से मनाते हैं। एक राम द्वारा रावण पर जीत कराके तथा दूसरे बड़े पैमाने पर देवी (दुर्गा) का पूजन करके। एक ही त्योहार में दोनों बातों का इतने बड़े पैमाने पर साझा प्रदर्शन होना किसी के लिए भी वास्तविक सच्चाई (कारण) जानने की उत्सुकता के साथ-साथ बहुत कठिनाई पैदा कर देते है। क्योंकि हिन्दू लोग स्वयं कारण कुछ बताते हैं लेकिन काम कुछ और ही करते नजर आते हैं। इस उपलक्ष्य में दस दिन पहले से ही हर गांव, मोहल्ले, गली, चौक, बाजार में एक जगह रामलीला का प्रोग्राम तो होता ही है। लेकिन उससे भी आश्चर्य की बात यह है कि इस दशहरा की तैयारी में महीनों पहले से प्रत्येक गांव, मोहल्ले, गली, चौक, बाजार में जितना भी संभव हो सके उतनी संख्या में दुर्गा की मूर्तियाँ स्थापित की जाती हैं । इन मूर्ति स्थलों की संख्या रामलीला स्थलों से दस गुना ज्यादा होती है। आम तौर पर देखने में यह दुर्गा माता का ही कोई महत्वपूर्ण त्योहार नजर आता है लेकिन वास्तविकता रूप में इसे लोग राम से जोड़ते हैं। इस भूल-भूलैया की स्थिति से बाहर निकलकर हम जानने का प्रयास करेंगे कि इस त्योहार के पीछे की वास्तविक सच्चाई क्या है? दशहरा को लोग विजयदशमी का नाम क्यों देते हैं? इसके पीछे का इतिहास क्या है? तथा इसका इस देश के मूलनिवासी बौद्धों से क्या सम्बंध है ?

lekV v'kkd vkj fot;n'keh dk bfrgkl

दशहरें के सम्बन्ध वास्तव में भारत के महान चक्रवर्ती सम्राट अशोक से है। महाराजा अशोक विश्वविख्यात महान शासक थे। उनका साम्राज्य बहुत विशाल था। किसी भी राज्य विस्तार के हिसाब से उनकी महानता को मापना ठीक नहीं। उनकी महानता तो उनके मानववादी सिद्धान्तों के कारण है। इन्हीं उच्च सिद्धान्तों के आधार पर ही उन्होंने शासन किया। अपने दसवें धम्म अभिलेख में उन्होंने कहा कि ''राजा की कीर्ति का मूल्यांकन प्रजा की नैतिक उन्नति से किया जा सकता है।'' यही कारण था कि सम्राट अशोक ने युद्ध का विनाशकारी मार्ग छोड़कर बुद्ध के शांतिपूर्ण मार्ग का अनुसरण किया ।

उन्होंने अपनी प्रजा को सद्धम्म के कल्याणकारी मार्ग पर चलने का आदेश दिया और अहिंसा तथा सदाचार को

अपने जीवन का आदर्श बनाया। उनका उद्देश्य था प्रजा की सर्वोपरि उन्नति। वास्तव में वह समस्त विश्व के प्राणियों का कल्याण चाहने वाले थे। जिसके लिए उन्होंने अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी। भारत की गौरवशाली कला और संस्कृति की शुरुआत भी सम्राट अशोक के समय से ही हुई। धम्म और बौद्ध स्तूपों की स्थापत्य कला इसके सर्वश्रेष्ठ प्रमाण हैं। उन्होंने आज से दो हजार वर्ष पूर्व भारत और पूरे विश्व को वही पाठ पढ़ाया जिसे आज संसार के सभी शांतिप्रिय देश संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से संचालित व क्रियान्वित करना चाहते हैं।

ऐसे महान सम्राट अशोक का जन्म इस पावन भारत भूमि पर अशोकावदान ग्रंथ के अनुसार लगभग 304 ईसा पूर्व चैत्र मास में शुक्ल–पक्ष की अष्टमी को हुआ था दिव्यावदान में अशोक की माता का नाम सुभद्रांगी मिलता है और उनके पिता का नाम बिन्दुसार था। जो मगध देश के राजा थे। जिनकी राजधानी पाटलिपुत्र थी। अशोक बचपन से कही तीव्र और कुशाग्र बुद्धि का धनी था। बड़ा होने के नाते शीघ्र ही उसने सभी शास्त्रों का ज्ञान अर्जित कर लिया था। अशोक के सौतेले भाईयों में सबसे बड़े भाई का नाम सुसीम था। इसलिए राजा का उत्तराधिकारी होने का हक उसी का था किन्तु अशोक की तीव्र बुद्धि को देखकर सभी अमात्य अशोक को ही उत्तराधिकारी बनाने के पक्ष में थे। इससे असमंजस में पड़े राजा को सभी राजकुमारों की परीक्षा लेकर भी सुसीम और अशोक दोनों को उत्तराधिकारी बनाना पड़ा। महाराजा बिन्दुसार ने सुसीम को उपराजा बनाकर तक्षशिला भेजा और अशोक को उज्जैन के लिए रवाना किया। उज्जैन के रास्ते में ही विदिशा नगरी पड़ती थी। अशोक ने उज्जैन जाते समय यहीं पड़ाव डाला था। यहीं पर स्कन्धमित्रा की अशोक से मुलाकात हुई और स्कन्धमित्रा को देखकर अशोक बहुत प्रभावित हुआ। अशोक ने अपने आमात्यों से कहकर उसके माता–पिता का पता लगवाया और स्कन्धमित्रा को पसन्द करने की बात कही। यह जानकर नगर सेठ ने अपनी कन्या का विवाह कुमार अशोक के साथ कर दिया। वास्तव में यह कन्या शाक्य कुल से ही थी किन्तु परिस्थितिवश उसके पूर्वज विदिशा में आकर बस गए थे। यही देवी, विदिशा महादेवी के नाम से जानी जाती है। किन्तु वर्तमान सूत्रों के अनुसार महान अशोक की रानी का नाम असंधिमित्रा बताया जाता है।

अशोक को उज्जैन के लिए रवाना किया। उज्जैन के रास्ते में ही विदिशा नगरी पड़ती थी। अशोक ने उज्जैन जाते समय यहीं पड़ाव डाला था। यहीं पर स्कन्धमित्रा की अशोक से मुलाकात हुई और स्कन्धमित्रा को देखकर अशोक बहुत प्रभावित हुआ। अशोक ने अपने आमात्यों से कहकर उसके माता–पिता का पता लगवाया और स्कन्धमित्रा को पसन्द करने की बात कही। यह जानकर नगर सेठ ने अपनी कन्या का विवाह कुमार अशोक के साथ कर दिया। वास्तव में यह कन्या शाक्य कुल से ही थी किन्तु परिस्थितिवश उसके पूर्वज विदिशा में आकर बस गए थे। यही देवी, विदिशा महादेवी के नाम से जानी जाती है। किन्तु वर्तमान सूत्रों के अनुसार महान अशोक की रानी का नाम असंधिमित्रा बताया जाता है।

अशोक असंधिमित्रा के साथ उज्जैन पहुँचे वहाँ की शासन स्थिति ठीक हुई। विवाह के एक वर्ष बाद रानी ने पुत्र को जन्म दिया। जिसका नाम महिंद (महेन्द्र) रखा गया। इसके दो वर्ष के बाद एक पुत्री का जन्म हुआ जिसका नाम संघमित्रा (संघमित्रा) रखा गया।

कुछ समय पश्चात महाराज बिन्दुसार मरणासन्न अवस्था पर पड़ गए तो उस समय पाटलीपुत्र में न तो सुसीम था और न ही अशोक। महाराज बिन्दुसार की इच्छा थी की इस समय सुसीम ही उनका उत्तराधिकारी बने किन्तु उसके आमात्यों के विचारानुसार केवल अशोक ही योग्य उत्तराधिकारी हो सकता था। उन्होंने अशोक को तुरन्त उज्जैन से पाटलिपुत्र आने का संदेश भिजवाया। अशोक सन्देश पाते ही पाटलिपुत्र आ गया सुसीम को भी संदेश दिया गया था किन्तु वह अज्ञात कारणों से समय पर नहीं आ सका।

महाराजा ने जब देखा कि सुसीम का कहीं कोई अता–पता ही नहीं, केवल अशोक ही उसके पास है। राजा ने अपना अंतिम समय नजदीक आता देख अपने सिर से राजमुकुट उतारा और अशोक के सिर पर रख दिया। इस प्रकार आमात्यों के प्रयत्नों से अशोक को सम्राट का पद प्राप्त हुआ। अशोक के राजा बनते ही राजमहल मे खुशियाँ छा गई। अशोक सन् 273 ईसा पूर्व के लगभग 34 वर्ष की आयु में मगध के राज्य सिंहासन पर आसीन हुआ। जनता को अशोक की सामर्थ्य और शक्ति पर पूरा विश्वास था।

अशोक के सम्राट बनने से राजधानी पाटलिपुत्र में उत्सव मनाया जाने लगा, किन्तु उपराजा सुसीम को जब यह समाचार मिला, तो वह बहुत क्रोधित हुआ और उसने अपने सैनिको के साथ राजसिंहासन को बलपूर्वक हथियाने के लिए तक्षशिला से पाटलिपुत्र की ओर कूच कर दिया। कहते हैं कि अशोक ने पाटलिपुत्र के बाहर अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित सैनिकों को बिठा दिया। जैसे ही राजकुमार सुसीम ने पाटलिपुत्र की सीमा में प्रवेश किया अशोक के सैनिको ने उसे घेर कर मार गिराया। इस प्रकार अशोक के समक्ष अब कोई राज्य का दावेदार नही रहा और वह मगध के एकछत्र महाराजा बन गए।

सम्राट अशोक के बड़े भाई उपराजा सुसीम की मृत्यु के समय उसकी रानी सुमना गर्भवती थी। उसने सोचा कि अशोक के सैनिक उसे भी मार डालेंगे इसलिए अपनी जान बचाने और गर्भस्थ शिशु की रक्षा के लिए उसने एक चांडाल के घर जाकर शरण ली। कष्टों में जीवन निर्वाह करती हुई कुछ दिनो पश्चात् न्यग्रोध (वट=बरगद) के पेड के नीचे उसने एक पुत्र को जन्म दिया। गांव के एक मुखिया ने राजपरिवार के सदस्य होने के कारण माता–पुत्र दोनो की सात वर्ष तक अपने संरक्षण में रखकर सेवा की। न्यग्रोध वृक्ष के नीचे जन्म लेने के कारण इस बालक का नाम 'न्यग्रोध कुमार' पड़ा।

उसके श्रामणेर होने के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उस युग में बौद्ध धर्म का अत्यधिक प्रचार था। अच्छे–अच्छे बौद्ध भिक्खु अपने त्यागमय जीवन और विद्वत्ता से लोगों को बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित कर रहे थे। अतः 'न्यग्रोध' भी विद्वान बौद्ध भिक्खुओं के संपर्क में रहकर बौद्ध बन गया। श्रीलंका के महावंस नामक बौद्ध ग्रंथ में न्यग्रोध के विषय में विस्तृत वर्णन मिलता है।

lkHkkj
R;kgkjk d jgL;
jk'ku ck)
¼i-l- 11 l 15 rd½

क्या भारत विकसित देश बन सकेगा?

xjhc dk lHkh rPN le>rs g(o mlds fy, T;knk dN djuk ugh pkgrA og mud ihN fpYykrk nkMrk g] yfdu o /;ku ugh nrA vkYM VLVkeUV dgkor 19-7A

किसी देश को कब विकसित माना जाता है? इस बात का पता चलता है उस देश की दौलत से, उसके लोगों की खुशहाली, और अंतरराष्ट्रीय मंच पर उसकी हैसियत से। और, वह देश कितना दौलतमंद है, इसका पता चलता है उसकी 'जी. एन. पी.' यानी उसका कुल उत्पाद, 'जी.डी. पी.' यानी कुल घरेलू उत्पाद, भुगतानों की बकाया रकम, विदेशी–विनिमय–मुद्रा की सुरक्षित निधि, आर्थिक विकास की दर, प्रति व्यक्ति आय, आदि से। इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय व्यापार (आयात और निर्यात दोनों) की मात्रा तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार में उसकी हिस्सेदारी की मात्रा, इन दोनों क्षेत्रों में उसके विकास की दर भी यह संकेत देती है कि उसकी आर्थिक स्थिति कितनी मजबूत है और उसमें कमाई हुई दौलत को सँभाले रखने और उसे लगातार बढ़ाते रहने की कूवत है या नहीं। आर्थिक संकेत वैसे अपने–आप में काफी वजन रखते हैं, लेकिन वे काफी कुछ छिपा भी जाते हैं, जैसे देश के मामूली आदमी की तंगहाली व दुर्दशा की बात। हैदराबाद स्थित 'डी.आर. डी.एल' (सुरक्षा अनुसंधान व विकास प्रयोगशाला) से जुड़े रहने की अवधि के दौरान, मुझे जो अनुभव हुए उनके बारे में मैंने और राजन ने काफी बातचीत की है, काफी सोच–विचारा भी है। वहाँ काम करते समय, मैं जिन तीन व्यक्तियों के सम्पर्क में आया, वे मेरे लिए प्रतीक बन गए, उन चंद सवालों और समस्याओं के, जिनका हल पाने के लिए मैं लगातार जूझ रहा था। पहला व्यक्ति वेंकट दो बेटों और एक बेटी का पिता था। तीनों स्नातक थे, और अच्छे पदों पर काम करते थे। उसी इलाके में रहता था कुप्पू, जो तीन बेटों का पिता था। वह सिर्फ एक बेटे को ही पढ़ा–लिखा सका था, और किराए के घर में रहता था। करूप्पन दो बेटियों और एक बेटे का पिता था। उसकी नौकरी अंशकालिक थी। गरीब होने की वजह से वह अपनी संतान को पढ़ा नहीं पाया था। उसके घर भी बदलते रहते थे। क्योंकि उसके लिए अपने बच्चों को गैरमामूली न सही, मामूली और औसत किस्म की जिन्दगी मुहय्या करना मुमकिन नहीं था? ताकि, वे खुशहाल लोगों की तरह पूरी जिंदगी जी सकें, ऐसे धंधे में जुड़ सकें, जो उन्हें अच्छी सेहत, रोजमर्रा की जिंदगी चैन से बिताने के मौके दे सके? विकसित भारत का यही एक सपना है हमारा।

'प्रति–व्यक्ति–आय' लोगों की औसत आय को ही जताती है। वह यह नहीं जताती कि हर देशवासी के पास उतना धन है। इसका आँकड़ा अमीरों और गरीबों दोनों की आमदनियों के औसत से निकाला जाता है। 'प्रति–व्यक्ति–आय' का यह आँकड़ा यह भी नहीं जताता कि किसी एक देश या एक राज्य या एक क्षेत्र की खुशहाली विश्वस्तर पर तुलनाओं के लिए एक जैसी है। आजकल एक नया मानदंड अपनाया जाने लगा है, खरीदी करने की क्षमता में समानता। इस कार्य के लिए कई इससे भी ज्यादा पेचीदा ढंग विकसित किए और अपनाए जाने लगे हैं। मगर ये सब मिलकर भी मनुष्य के दैनिक जीवन के चंद पहलुओं को ही दर्शा पाये हैं। ये आंकड़े इस बात पर बिलकुल प्रकाश नहीं डालते कि लोगों ने जीवन–स्तर प्राप्त कर लिया है, उसे वे बनाए रख सकते हैं या नहीं।

ykx vkj fodkl

लोगों के जीवन से जुड़े जिन मुद्दों की पहचान करने के लिए जो मानदंड अपनाए जा रहे हैं, वे इस प्रकार हैं –

लोगों को किस प्रकार का भोजन मिलता है, भोजन की पौष्टिकता की स्थिति, उनके विकास और जीवन की विभिन्न अवस्थाओं के लिए आवश्यक भोजन की उपलब्धता, जीवन–काल की औसत सम्भावनाएँ, शिशुओं की मृत्यु–दर, पीने के पानी की उपलब्धता और गुणवत्ता, रहने की जगह की मात्रा, लोगों के आवासों की श्रेणियाँ, रोगों के आक्रमण के क्रम, उनके कारण होने वाले दुष्प्रभाव, असमर्थताएँ और गड़बड़ियाँ, चिकित्सा–सुविधाओं की सुलभता, साक्षरता, स्कूलों और पढ़ाई के केन्द्रों की सुविधाएँ, तथा तेजी–से हो रहे आर्थिक परिवर्तनों और समाज की माँगों के मद्देनजर किस्म–किस्म के हुनरों के विविध स्तरों की आवश्यताओं के अनुसार शिक्षण की सुविधाएँ आदि।

जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए जरूरी कई और सुझावों का जिक्र भी किया जा सकता है। और यदि इस सम्बन्ध में गाँधीजी के सुझाए हुए 'मंत्र' को भी याद करके, उसे भी इन सुझावों में शामिल कर लिया जाए, तो परेशानी और बढ़ जाएगी। वैसे उनका यह सुझाव बड़ा सीधा–सादा था। उनका कहना था कि देश के लिए किए गए हर काम की कसौटी यह होनी चाहिए कि उसके द्वारा देश के सबसे गरीब और पिछड़े आदमी की आँखों के आँसू पोंछे जा सकते हैं या नहीं। उनका मानना था कि जब ऐसा दिन आएगा, तभी यह माना जाएगा कि हमारा राष्ट्र सुखी राष्ट्र हो गया है।

नेहरूजी के मन में भी सम्पूर्ण भारत को सुखी और खुशहाल बनाने का सपना पलता रहता था। उनका मानना था कि यह तभी मुमकिन है जब देश में फैली निरक्षरता, गरीबी, बीमारियाँ, अज्ञान और हर देशवासी को आगे बढ़ने के समान अवसर नहीं मिलेंगे, तब तक देश के विकास की प्रगति अवरूद्ध रहेगी। लेकिन, मौजूदा

हालात में उनका अपेक्षाकृत आसान लक्ष्य भी पूरा होता दिखाई नहीं देता। वैसे, आजादी की लड़ाई के दिनों में वह आसानी से मुमकिन होता दिखाई देता था। तब ज्यादातर हिंदुस्तानियों के मन में देश की आजादी के लिए मर–मिटने की तमन्ना और आजाद हिन्दुस्तान में जीने की ललक थी। आजादी के पचास साल पूरे हो जाने के बाद, वह पचास साल पुरानी उमंग, तमन्ना और ललक बिलकुल दिखाई नहीं देती। जब भारत को विकसित देशों की कतार में खड़े हुए देखने की बात उठती है तो किसी भी भारतीय के चेहरे पर उम्मीद की चमक नहीं दिखाई देती, दिखाई देते हैं, निंदकता और मानवद्वेष से भरे चेहरे। आज के हम हिन्दुस्तानियों के मन में यह बात घर कर गई लगती है कि विविध संकेतों से यह प्रतीत होता है कि उस हिन्दुस्तान को विकसित बनाने की उम्मीद करना व्यर्थ है, जहाँ के सब लोग उन्नत होने की लगातार कोशिश नहीं करते, और जिनकी तादाद लगातार बढ़ती ही जा रही है। जरूरत इस बात की है कि हम सब हिंदुस्तानियों को सुरक्षित और सुखद 'वर्तमान' तो मिले ही, बेहतर 'भविष्य' भी मिले। हम सबको ऐसे ही विकसित भारत के सपनों को साकार करना है।

जब भारत आजाद हुआ तब मैं किशोर था। मेरे स्कूल के हेडमास्टर साहब हम सब विद्यार्थियों को अपने इलाके के एक रेडियो पर खबरे सुनने के लिए ले जाया करते थे। रेडियो पर आने वाली खबरों को सुनकर हम सबको मालूम पड़ता कि दिल्ली में क्या हो रहा है। हम भाषण सुनते, खबरों के पार क्या हो रहा है, यह जानते। मैं अपने भाई की उसके काम में मदद करने के लिए, रामेश्वरम् में सुबह छपने वाले अखबार 'दिनमणि' की प्रतियाँ घर–घर बाँटा करता था। यह काम करते समय मुझे अखबार में छपी खबरों को पढ़ने का मौका भी मिल जाता था। इस दौरान, आजादी के बाद के मतवाले कर देने वाले दिनों में मुझे एक ऐसी खबर सुनने को मिली, जिसने मुझे हिलाकर रख दिया था। यह वह जमाना था, जब सारा मुल्क आजादी का जश्न मना रहा था। देश के नेता दिल्ली में जमा होकर उस तात्कालिक कार्य के बारे में सोच–विचार कर रहे थे, जो उन्हें अपने सामने दिखाई दे रहा था। लेकिन, ठीक उसी समय, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, जिन्हें वास्तव में सत्ता के केन्द्र–स्थल पर होना चाहिए था, वहाँ से बहुत दूर नोआखाली में थे, दंगो से पीड़ित असहाय लोगों के बीच, साम्प्रदायिक दंगों के शिकार बने इन अभागे लोगों के घावों पर मरहम लगाते हुए, उन्हें सान्त्वना प्रदान करते हुए। ऐसे समय में, जब सब राष्ट्रीय नेता उनके आदेशों का पालन करने को तैयार थे, उन्होंने अपने विश्वास में पूरी आस्था की अभिव्यक्ति दिखाकर जिस अद्‌भुत साहस का परिचय दिया, वह बेमिसाल घटना थी। सब भारतीयों की बेहतरी और कल्याण के प्रति इसी प्रकार की गहरी और अडिग आस्था के आधार पर ही हमने एक विकसित भारत का सपना देखा है।

dVuhfrd lkeF;Z

देश की आजादी को हासिल करना हम सब भारतीयों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण था। आज सैनिक प्रभुत्व का स्थान आर्थिक प्रभुत्व ने ले लिया है। और, देश पर किसी बाहरी शक्ति का आर्थिक प्रभुत्व हो, यह उतना ही घृणास्पद है, जितना घृणास्पद पचास वर्ष पूर्व सैनिक प्रभुत्व था। आज के विश्वीकरण युग में, जो किसी देश की अर्थव्यवस्था के सार्वभौमिक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण का दूसरा नाम है, हमारे समाज पर बाहरी शक्तियों के प्रभाव को मजबूत करता है। इस बारे में कुछ विशेषज्ञ यह कह सकते हैं कि ये शक्तियाँ आर्थिक या व्यापारिक या बाजार की शक्तियाँ हैं, और उनका प्रभाव देश के लिए हितकर ही सिद्ध होगा, कारण, वे हमारी मूल प्रतिस्पर्धात्मकता को, उन क्षेत्रों में, जहाँ हम प्रतियोगितात्मक दृष्टि से लाभदायक स्थिति में हैं, विकसित करेगा। हम उनके इस मत से इस हद तक सहमत हैं कि प्रतिस्पर्धा, चाहे वह आन्तरिक हो या विदेशी प्रतियोगितों से हो, हमारे देश को अधिक मजबूत, कुशल और दक्ष बनाने में सहायक होगी। लेकिन, हम यहाँ यह बताना भी जरूरी समझते हैं कि विकसित देशों ने ऐसे कई शुल्क–विषयक व्यवधान खड़े कर रखे हैं, जो बाजार की शक्ति के नाम पर 'आदर्श प्रतियोगिता' की भावना पर कुठराघात करते हैं। इनमें से अधिकांश व्यवधानों का एकमात्र उद्देश्य है–अविकसित देशों को विकसित देशों की श्रेणी में बैठ सकने से रोकना। और जैसे ही कोई अविकसित देश अपने कानूनों या बहुदेशीय संधियों के माध्यम से इन व्यवधानों के असर को कम करने की कोशिश करता है, वैसे ही नए–नए पेचीदा किस्म के व्यवधान खड़े कर दिए जाते हैं। इन अंतराष्ट्रीय या विश्वव्यापी व्यवहारों के ऊपरी विश्लेषण से ही पता चल जाता है कि लेन–देन के इन व्यवहारों के पीछे एक गहरी साजिश छिपी है, इस सच्चाई को दर्शाती हुई कि चंद विकसित देश नहीं चाहते कि अविकसित या विकासशील कोई भी देश उनकी कतार में आकर खड़ा हो। इसलिए, भारत को विकसित देशों की कतार में आकर बैठने के अपने सपने को साकार करने के लिए इन शक्तिशाली देशों द्वारा बड़ी होशियारी से जान–बूझकर चुने गए चक्रव्यूह में न फँसने के लिए सावधान रहना पड़ेगा।

राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे अब महज सुरक्षा–विभाग से जुड़े मुद्दे नहीं रहे हैं, बल्कि वाणिज्य, व्यापार, पूँजी–निवेश जैसे मुद्दों और ज्ञान व कौशल के आधार के सृजन और उपयोग के मुद्दे से भी जुड़े हुए हैं। वास्तव में मौजूदा स्थिति एक नए किस्म की युद्धस्थिति को जन्म देती जा रही है। यदि कोई देश इन सब नई वास्तविकताओं पर हावी होने में नाकामयाब रहता है, तो उसके अपने देशवासियों को खुशहाल और समृद्ध बनाने के सपने, सपने ही रह जाएँगे। इसका मतलब यह नहीं है कि हम दुनिया के मुल्कों से अलग–अलग होने की बात कर रहे हैं, या पुराने ढंग की प्रौद्योगिकी के आधार पर आत्मनिर्भर होने की प्रवृति को बढ़ावा दे रहे हैं। हमारे कहने का मतलब यह है कि हमें अपने सामरिक हितों की रक्षा करने के लिए नवीनतम और बेहतर किस्म की परिष्कृत प्रौद्योगिकी को विकसित करना होगा।

मैंने हाल ही में राष्ट्रीय सुरक्षा की अपनी कल्पना की रूपरेखा प्रस्तुत की थी। मैंने कहा था, ''किसी देश को महान बनाते हैं उसमें रहने वाले लोग, और यही लोग आगे चलकर उस महान देश के महत्वपूर्ण नागरिक बन जाते हैं। सुरक्षा–विभाग को सुदृढ़ बनाने के लिए गैर–सामरिक प्रणाली के प्रयोग से हम न तो अपने देश की सुरक्षा को मजबूत पर पाएँगे, और न आर्थिक आजादी की सुरक्षा कर पाएँगे। यहाँ इस बात को ध्यान में रखना होगा कि सामरिक महत्व की प्रणालियाँ हमें कभी उपलब्ध नहीं होगी। दूसरे देशों की सामरिक महत्व की प्रणालियों का आयात करके हम हमेशा के लिए दूसरे देशों पर निर्भर होने के आदी हो जाएँगे। अपनी सुरक्षा को मजबूत बनाए रखने की शक्ति और अपनी विदेश–नीति को आजाद रखने की ताकत हमें तभी मिलेगी, जब हम अपनी सुरक्षा और सुरक्षा–प्रणालियों को आत्मनिर्भर रखने के लिए, सुरक्षा के आधार को पूरा सुदृढ़ करना सीख जाएँगे। इसके लिए हमें अनेक प्रौद्योगिकीय क्षेत्रों में अपनी मूल क्षमताओं में काफी वृद्धि करनी पड़ेगी, और वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी को नवीनतम उपकरणों से सज्जित करना पड़ेगा। मूल क्षमताओं में विकास के सतत प्रयासों के अलावा हमें केन्द्रीय महत्व की प्रौद्योगिकियों में आत्मनिर्भरता के दायरे को भी विस्तृत करना होगा। तभी हम अपने देश में एक नई क्रान्ति लाकर देश की कायापलट कर सकेंगे। हमें इस तथ्य को स्वीकार करना होगा कि प्रौद्योगिकी ही वह एकमात्र साधन है जिसका सही उपयोग किए बिना और उसका आवश्यक योगदान प्राप्त किए बिना, हम तेजी–से आर्थिक विकास नहीं कर सकेंगे, और न अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को दृढ़तम बना सकेंगे। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रणी देशों की शानदार सफलता के मद्देनजर, हम इन क्षेत्रों में कार्यरत अपने संस्थानों से माँग कर सकते हैं कि वे असम्भव को सम्भव करके दिखाएँ। और तभी नई–नई सम्भावनाओं के युग का प्रादुर्भाव होगा।''

एक विकसित भारत ही अपने सामरिक हितों की रक्षा कर सकेगा, अपनी आन्तरिक शक्तियों तथा नई वास्तविकताओं का समायोजन करके। इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए देश के स्वस्थ, शिक्षित और सम्पन्न नागरिकों की, जो अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ता में विश्वास करते हों और वर्तमान तथा भविष्य में होनेवाले उलट फेरों से अप्रभावित रहने के संकल्प के साथ आगे आ सकने का इरादा रखते हों।

jk"Vª dh ey 'kfDr iz|kSfxfd;ka esa fNih gS

इस पुस्तक में हम अपना पूरा ध्यान केंद्रित करेंगे उन अनिवार्य और अत्यावश्यक प्रौद्योगिकियों पर जो भारत को अपनी आन्तरिक शक्तियों को विकसित करनी होंगी, इन तीन गतिशील आयामों को अपने जहन में रखते हुए–

– लोग

– समग्र अर्थव्यवस्था

– सामरिक हित

इन तीनों अनिवार्य प्रौद्योगिकियों में हमें अपना पूरा ध्यान, 'समय' नाम के 'चौथे' आयाम पर भी रखना होगा। 'समय' की आज के वाणिज्य–व्यापार और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में बहुत अहम भूमिका रहती है। समय के कारण ही लक्ष्यों को बार–बार बदलना पड़ता है। हमारा विश्वास है कि इस 'चौथे' आयाम का सरोकार खास तौर पर प्रौद्योगिकियों से बहुत ज्यादा है, क्योंकि विश्व सन्दर्भ में देखने पर पता चलता है कि समय की देरी प्रौद्योगिकियों की शक्ति, आर्थिक परिवर्तनों और सामरिक हितों को प्रभावित कर, लोगों की आकांक्षाओं और हितों पर प्रतिकूल असर डाल सकती है।

जैसा कि तालिका 1.1 में दर्शाया गया है, मानव–इतिहास के केन्द्र में स्थित है प्रौद्योगिकी की प्रगति। आज के बाजारों की प्रतिस्पर्धात्मक भूमिका में प्रौद्योगिकीय शक्तियाँ उत्पादन–क्षेत्र में रोजगारों को बढ़ावा देती हैं और कुशलताओं के निरन्तर उन्नयन में भी सहायक होती हैं। प्रौद्योगिकियों के प्रभावी प्रयोग के बिना हम आने वाले वर्षों में लोगों का सर्वांगीण विकास नहीं कर पाएँगे। प्रौद्योगिकी मौजूदा और नए–नए रोगों के खतरों को दूर या कम करने और उनका सामना करने में भी सहायक हो रही है।

पिछले दशक में यह बात अधिकाधिक साफ हो गई है कि देश की सामरिक क्षमताओं का प्रौद्योगिकी से सीधा सम्बन्ध है। कई मूल क्षेत्रों में भारत की अन्तर्निहित शक्ति के कारण ही भू–राजनीतिक दृष्टि में भारत अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में है। विकसित देश बनने के इच्छुक किसी भी देश के लिए सामरिक महत्व की अनेकानेक प्रौद्योगिकियों में सशक्त होना, तथा उन्हें उन्नत करना और उनमें लगातार सुधार करते रहना आवश्यक है।

लोग–अभिमुखी कार्यकलापों में, चाहे वे बड़े पैमाने पर रोजगार मुहय्या करने की मुहिम से जुड़े हों या लोगों को बेहतर भोजन, स्वास्थ्य–सेवा या रहने–जीने की बेहतर सुविधाओं से जुड़े हों, सर्वोपरि महत्व है–प्रौद्योगिकियों के योगदान का। रोग–निदान के सशक्त हथियार के रूप में एक्स–रे रूपी प्रारंभिक

आविष्कार के बाद से, पेनिसलीन जैसे रोग–निवारक टीकों या प्रतिजैविक आविष्कार तथा प्रौद्योगिकी ने काफी लम्बा रास्ता तय किया है। इस दौरान, स्वास्थ्य–रक्षा के क्षेत्र में कई भरोसेमंद, आम आदमी की पहुँच में आ जाने वाले अनेक रोग निदानकारी साधनों का आविष्कार हो चुका है। ऐसी नई–नई दवाइयाँ बाजार में उपलब्ध हैं, जिनका उत्तर–प्रभाव नहीं के बराबर होता है। और अब तो न्यूक्लिय जैविकी के आगमन के साथ नई–नई सम्भावनाएँ क्षितिज पर उभर रही हैं। अधिकाधिक प्रौद्योगिक प्रोत्साहन के अभाव में उत्पादकता के कम होते जाने और कीमती प्राकृतिक स्त्रोतों और साधनों के व्यर्थ जाने का भी डर है। इसका सबसे बड़ा नुकसान गरीब–से–गरीब आदमी को सबसे ज्यादा होगा।

rkfydk&1-1

ik|kfxfd;k dk fodkl vkj ekuo ij mudk iHkko

1998 से पूर्व का आनुमानिक काल वर्ष	नवीकरण / योगदान	परिणाम कारण
1,00,000	शिकार के लिए जरूरी साज–सामान का निर्माण और प्रयोग	मानवीय क्षमता में वृद्धि
40,000	हथियारों का निर्माण व प्रयोग	
3,500	नाव और पाल–नाव	
800	घड़ी, कुतुबनुमा तथा मापन	हाथ से किया गया काम आसान के अनेक यंत्र हुआ या उसमें कमी हुई
360	यंत्रचालित कैलकुलेटर	दिमागी काम को आसान बनाने के लिए
190	रेलमार्ग / ऊर्जा के लिए कोयले या तेल का प्रयोग	
160	बिजली	
140	आवाज और रूप के प्रतिबिंब	परिवहन में तेजी और आसानी
100	दूरसंचार / एक्स–रे	दूरसंचार की उपलब्धता से संचार में तेजी
95	वायुयान	
80	कार और सड़के	
70	रासायनिक उत्पादों का विशाल उत्पादन	
55	नाभिक अस्त्र / ऊर्जा	
50	कम्प्यूटर	कलाओं और मनोरंजन की गुणवत्ता में सुधार
45	घरों में काम आने वाले उपकरणों का विशाल उत्पादन	रहन–सहन की गुणवत्ता में सुधार
40	उर्वरकों और गर्भ–निरोधक उपायों का बड़े पैमाने पर प्रयोग	
35	लेजर	
30	मानव चंद्रमा पर उतरा / टिशुओं और मानव अंगों का प्रत्यारोपण	
20	कैट स्कैन (शरीर की बारीक जाँच)	
10	पौधों की आनुवंशिकी इंजीनियरी / इंटरनेट	परिवर्धित ज्ञात का आधार और उसके प्रयोग

मानव के अन्य क्रिया–कलाप की भाँति कुछ प्रौद्योगिकियों के प्रयोगों के बाद उनके उत्तर–प्रभावों का होना स्वाभाविक है। इनको दूर करने की जरूरत है। इसे आंशिक रूप से सब लोगों के बारे में बेहतर जानकारी प्राप्त करके, तथा प्रौद्योगिकीय समस्याओं का हल जान करना संभव है। आजकल प्रौद्योगिकी से उत्पन्न समस्याओं को इस कदर उछाला जाता है, जैसे हमें इन समस्याओं के हल कभी नहीं मिलेंगे, जैसे इन समस्याओं ने हमें हरा दिया हो। इसमें कोई संदेह नहीं कि बेलगाम प्रौद्योगिक विकास से पर्यावरण दूषित होता है। चीन इसकी एक कारगर मिसाल है। लेकिन, दूषित पर्यावरण की समस्या को प्रदूषण फैलाने वाले कारखानों के साथ प्रदूषण समाप्त करने वाले कम कीमत वाले यंत्रों को लगाकर हल किया जा सकता है। इस पुस्तक के सभी अध्यायों में इसी महत्वपूर्ण विषय पर विस्तार से चर्चा की गई है, क्योंकि हमारे देशवासी एक बेहतर जीवन जीने के हकदार हैं और, प्रौद्योगिक विकास उन्हें ऐसा जीवन प्रदान कर सकता है।

पिछले दो दशकों से इस विषय पर विस्तृत खोज की गई है कि प्रौद्योगिकियों और आर्थिक शक्तियों का गहरा सम्बन्ध है। हम इस बात को दोहराना नहीं चाहते कि प्रौद्योगिकीय ताकत को हासिल करने के लिए आर्थिक मदद सर्वोपरि आवश्यक है। लेकिन, इस सम्बन्ध के महत्व को न देश के कुछ अग्रणी नेताओं ने समझा है, न प्रमुख उद्योगपतियों और साधारण जन ने। इसकी अहमियत उनकी सोच के बाहर लगती है। लेकिन यदि भारत को दुनिया की प्रमुख आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न देशों की बराबरी करनी है, और अपनी जी.डी.पी. यानी घरेलू उत्पाद बढ़ानी है, तो ऐसा करना बड़े पैमाने पर प्लांट मशीनरी, साजसामान, और तकनीकी जानकारी का आयात करके या 'टर्नकी' (नल खोलने और बंद करने जैसी आसान) निर्माण–योजनाओं पर निर्भर रहकर, मुमकिन नहीं है। अल्पकालिक यथार्थ का सहारा मत छोड़िए, मगर मध्यकालिक और दीर्घकालिक योजनाओं को अपने देश के अंदर के उद्योगों को पूर्णतया सशक्त बनाने के उद्देश्य से मूल औद्योगिकीय शक्तियों को विकसित करना ही होगा। अपने अध्ययन से हमें पता चला है कि ऐसी योजनाओं को अमल में लाकर ही, ताकतवर और विकसित भारत का हमारा सपना पूरा होगा। इसके लिए हमें अपनी मूल शक्तियों की पहचान करनी होगी, और उन्हें आधार मानकर आगे बढ़ना होगा।

इस प्रकार, चारों आयामों, अर्थात् (1) लोग (2) अर्थ–व्यवस्था (3) अनुकूल शक्तियाँ और (4) भविष्य में दीर्घकाल तक उनको अपनाए रहने और उनमें निरन्तर सुधार करते रहना तथा सब आवश्यक प्रौद्योगिकियों पर प्रभुत्व प्राप्त करना हमारा मुख्य उद्देश्य और लक्ष्य होना चाहिए। और, देश के लोगों को इस उद्देश्य ओर लक्ष्य को ही सर्वोच्च वरीयता देनी होगी। इसे विकास का सार या मूल तत्व माना जाना चाहिए। आगे के अध्यायों में इसी परिकल्पना की विस्तार से चर्चा करके उसे विकसित किया गया है।

vFk0;oLFkk dh ,d ifjdYiuk

किसी राष्ट्र के लिए की गई प्रौद्योगिकी–विषयक कल्पना के गठन के लिए पूर्ण रूप से उसकी अर्थव्यवस्था तथा उसके विकास के सामाजिक आयामों के समाकलन की जरूरत होती है। TIFAC के अध्ययन की पृष्ठभूमि में भारत के अंदर अनेक अध्ययन किए गए। इनमें से कई काफी विस्तृत थे, और कई योजनाओं के निष्कर्षों पर आधारित थे। इन अध्ययनकर्ताओं को यह लाभ था कि उन्होंने अनेक परियोजनाओं से जो मानचित्र, प्रक्षिप्त चित्र आदि प्राप्त किए थे, वे लोगों की उन वास्तविकताओं, आकांक्षाओं और विवशताओं को दर्शाते थे, जो उन्होंने काफी संख्या में लोगों से बातचीत और बहस करके जमा किए थे। वे विकास–दरों को भी दर्शाते थे। इसके अलावा, आर्थिक व्यवस्था को इंगित करने वाले, तथ्यों व प्रक्षिप्त चित्रों की तह में पड़ी ऐसी मान्यताएँ और अभिधारणाएँ भी थी जों पूँजी निवेश, राजस्व, प्रशासनिक व कानूनी नियंत्रणों से जुड़ी थीं। और ये सब अंततः जुड़ी थीं मानवीय संसाधन के मुद्दे से। योजनाओं को कार्यान्वित करने की तमाम तफसीलों की कल्पना करना सम्भव नहीं है। सच तो यह है कि कोई भी परिकल्पना सम्भाव्यता की रपट नहीं होनी चाहिए। उसे महज़ एक नारा या शाब्दिक खेल नहीं होना चाहिए। फिर भी, इस पृष्ठभूमि में विकसित भारत की सम्भाव्यता की कुछ प्रयोजनाओं पर विचार करना उचित रहेगा। लेखकद्वय श्री टी. के. भौमिक तथा उनके कार्यकारी दल के सदस्यों के प्रति आभारी है कि उन्होंने हमें अनेक विश्लेषण तथा उनसे प्राप्त सूचनाएँ मुहय्या कराईं।

1994 में विश्व जी.डी.पी. यानी घरेलू उत्पाद 25224 बिलियन डॉलर था। यह मानकर कि 1955–2000 में विकास दर 2.5 प्रतिशत होगी और 2010–2020 में 3.5 प्रतिशत होगी, हम उस काल की प्रायोजना का अनुमान लगा सकते हैं। यह 55453 बिलियन डॉलर होना चाहिए। इक्कीसवीं सदी के आरम्भ की जो अनुमानित विकास–दर प्रायोजित की गई है, उसका आधार यह है कि इस अवधि में भारत समेत अनेक तेजी–से विकसित हो रही अर्थव्यवस्थाएँ उभर कर अपनी पहचान बनाएंगी। हाल ही में दक्षिण पूर्व एशिया के देशों की अर्थव्यवस्थाएँ जिस प्रकार आहत हुई हैं, उससे इन देशों की विकास दरों के आँकड़े अवश्य प्रभावित होंगे, किन्तु कुल मिलाकर, इन संकेतों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जहाँ तक भारत का सम्बन्ध है, भारत की विकास–दर अप्रभावित रहेगी।

विश्वव्यापी नजर डाली जाए तो पता लगेगा कि 100 बिलियन डॉलर की जीडीपी यानी घरेलू उत्पाद वाले सब देश विकसित देशों की श्रेणी में आते हैं। 1980 तक भारत भी इस श्रेणी में आता था, चीन, मैक्सिको तथा अन्य देशों के साथ। 1980 में इन 19 देशों का सामूहिक घरेलू उत्पाद 55453 बिलियन डॉलर था जिसमें भारत की भागीदारी महज 1.74 प्रतिशत थी। 1990 के दशक में इस श्रेणी में कुछ नए देशों का आगमन हुआ और कुछ देश इस श्रेणी से बाहर हो गए। 1990 में विकसित देशों, जिन्हें 'बिग लीग' के देश भी कहा जाता है, की संख्या 24 थी, और उसका सामूहिक घरेलू उत्पाद 17625 बिलियन डालर था, जिसमें भारत की भागीदारी सिर्फ 1.44 प्रतिशत थी। यह अवनति बेहतर प्रदर्शन करने वाले देशों की तुलना में शोचनीय थी। 1994 में 'बिग लीग' के सदस्यों की संख्या बढ़कर 28 हो गई। जिन नए देशों का 'बिग लीग' में आगमन हुआ, वे थे–थाईलैंड, दक्षिण अफ्रीका और तुर्की। इनका सामूहिक घरेलू उत्पाद 22348 बिलियन डॉलर का था। मगर, भारत की भागीदारी का आँकड़ा और नीचे लुढ़का, और 1.31 प्रतिशत तक आ गया।

आर्थिक विकास की दर के मौजूदा रूख को देखते हुए, ऐसी धारणा है कि 2000 तक 'बिग लीग' के सदस्यों की संख्या बढ़कर 33 हो जाएगी, और उसमें भारत की भागीदारी भी बढ़कर 42 होगी, और भारत की भागीदारी 4.07 प्रतिशत होगी। (देखिए तालिका 1.3) आरेख 1.1 जताता है कि यह प्रगति कैसे होगी।

इस प्रारम्भिक कवायद से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारे सामने कौन–कौन सी चुनौतियाँ हैं। विकास–दरों का जो अनुमान लगाया गया है, उन्हें प्राप्त करना असम्भव तो नहीं है, लेकिन आसान भी नहीं है। चौथे नंबर पर पहुँचना जरूर अधिक चुनौतीपूर्ण होगा, क्योंकि हमें आने वाले वर्षों में 10 से 13 प्रतिशत की विकास–दरों को हासिल करना होगा। (देखें, आरेख 1.1) दक्षिण पूर्व के एशियाई देश जिन आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे हैं, उन्हें नई चुनौतियों के रूप में भी देखा जा सकता है, और नए अवसरों के रूप में भी।

हमारा विश्वास है कि एक राष्ट्र के रूप में हमें सन् 2020 तक कम–से–कम चौथे स्थान तक पहुँचने का लक्ष्य बना लेना चाहिए। यह सच है कि इस लक्ष्य तक

rkfydk 1-2
fo'o ?kjsyw mRikn

o"kZ	vejhdh fcfy;u MkWyj
1995	25854.08
1998	27842.02
2000	29251.52
2002	31032.94
2005	33910.53
2007	35975.68
2010	39311.60
2015	46689.85
2020	55452.90

ukV % 1995–2000 की अवधि के लिए विकास की अनुमानित दर 2.5 प्रतिशत। 2000–2010 के लिए 3 प्रतिशत और 2010–2020 के लिए 3.5 प्रतिशत। सौजन्य : टी. के. भौमिक, वरिष्ठ सलाहकार, कॉनफेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री

rkfydk 1-3
fo'o vFkZO;oLFkk dh ^fcx yhx* ¼cM+h fodflr n'ksa½

देश	सामूहिक घरेलू उत्पाद (अमरीकी मिलियन डालर)	भारत का प्रतिशत

1980 (कुल संख्या 19)
भारत, चीन, ब्राजील, मैक्सिको, 8168190 1.74
अर्जेन्टीना, सऊदी अरब, स्पेन
इटली, ब्रिटेन, आस्ट्रेलियन, जापान
कनाडा, अमरीका, नीदरलैंड, फ्रांस
बेल्जियम, स्वीडन, जर्मनी, स्विटजरलैंड

u, n'k % इंडोनेशिया, ईरान,
डेनमार्क, आस्ट्रिया, कोरिया,
नार्वे, फिनलैंड। 17624570 1.44
n'k tks ckgj x;s % अर्जेन्टाइना और
सऊदी अरब
1994 (कुल संख्या 28) 22347726 1.31
u, n'k % थाईलैंड, द. अफ्रीका,
सऊदी अरब, अर्जेन्टाइना, तुर्की
n'k tks ckgj gq, % ईरान
200 (कुल संख्या 33)
u, n'k % पोलेंड, मलेशिया, पुर्तगाल,
इजराइल, फिनलैंड 25943552.7 1.68
2010 (कुल संख्या 38)
u, n'k % फिलिपिन, कोलम्बिया, 34831636.5 2.62
पाकिस्तान, ईरान, चिली
2020 (कुल संख्या 42)
u, n'k % पेरू, हंगरी, वेनेजुला 52488568.2 4.07
और ग्रीस

ukV %& उन देशों को ही ''बिग लीग की श्रेणी में रखा गया है जिनका घरेलू उत्पादन 100 बिलियन डॉलर या उससे अधिक का हो। lkStU; % टी. के. भौमिक, वरिष्ठ सलाहकार, सी.आई.आई.।

पहुँचने के लिए हमें बहुत–सी बातें ज़हन में रखनी होंगी। मिसाल के तौर पर, अन्य देश हमारी आशाओं के विपरीत अपने लक्ष्य से भी आगे पहुँच जाएँ। यह भी मुमकिन है कि हमारे अनुमानित विकास के साथ–साथ, अंतरराष्ट्रीय लेन–देन के क्षेत्र में (चाहे वह व्यापार के क्षेत्र में हो, वित्त के क्षेत्र में हो, या प्रौद्योगिकी के या अन्य किसी क्षेत्र में हो) प्रतिस्पर्धा भी तीव्रतर हो जाए। यह प्रतिस्पर्धा कोई भी रूप या आकार, जो मौजूदा रूप या आकार से जुदा होगा, ले सकती है। देश के अनेक द्विपक्षीय या बहुपक्षीय व्यवस्थाओं से बँधे होने के बावजूद भारत के हितों के विरूद्ध अनैतिक तरीके मिलजुलकर, इन हितों में सेंध लगा सकते हैं। लेकिन, इस सब सम्भावनाओं के बावजूद, हमें यह सबक सीखना होगा कि विकसित होना और शीर्ष पर बैठे देशों की कतार में जगह हासिल करना आसान नहीं है। इसलिए, अपने विकास की गति में निरन्तरता कायम रखने के उद्देश्य से हमें अपने आयातों और निर्यातों में हितकारी सन्तुलन बनाए रहना होगा और कृषि, उद्योग तथा सेवा के क्षेत्रों में अंतर्जात प्रतिस्पर्धात्मक क्षमताओं और शक्तियों को अक्षुण्ण रखना होगा। और, यह सब कुछ करते समय हमें अपने इस बुनियादी लक्ष्य को भी सदा ध्यान में रखना होगा, बिना किसी से किसी तरह का समझौता किए। हम जो विकास कर रहे हैं, उसका अन्तिम लाभ देश के सब निवासियों को जल्दी–से–जल्दी मिलना शुरू हो जाना चाहिए। तालिका 1.4 को देखकर आपको थोड़ा अन्दाजा हो जाएगा कि सकल घरेलू उत्पाद को आय के अनुसार, किस प्रकार विभाजित होना चाहिए।

आरेख 1.1

'बिग लीग' (चोटी के विकसित देश) में भारत
1996-2020

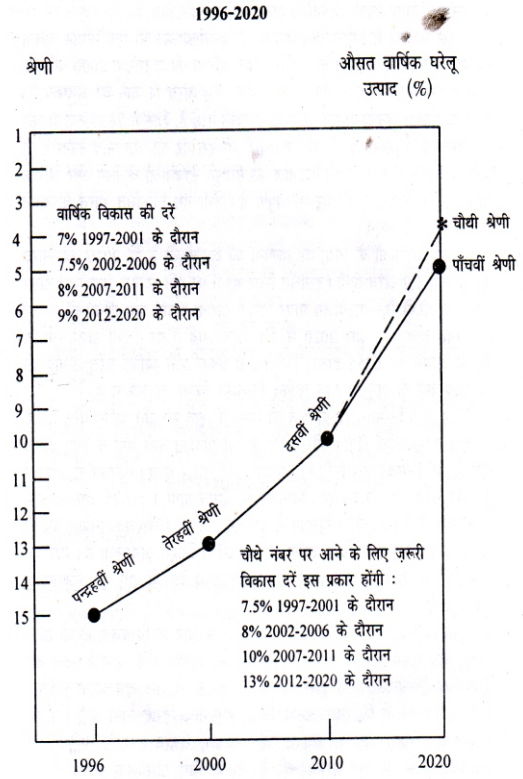

सौजन्य : टी.के. भौमिक,
वरिष्ठ सलाहकार
सी.आई.आई.

इस सम्बन्ध में निरन्तर बढ़ती देश की जनसंख्या पर भी एक निगाह डालना स्वाभाविक है। एक अनुमान के अनुसार, सारी दुनिया की जनसंख्या 2000 वर्ष तक 7 अरब हो जाएगी। 2020 तक उसके बढ़कर 9.4 अरब हो जाने का अनुमान है। भारत में मौजूदा जनसंख्या की वृद्धि का प्रतिशत 1.8 है, जिसके 2020 तक घटकर 1.5 प्रतिशत हो जाने का अनुमान है। यदि हमें इस दर को और नीचे लाना है तो प्रारंभिक शिक्षा और सेहत की देखभाल की मूलभूत सुविधाओं के लिए और अधिक राशि लगाना अत्यावश्यक और महत्वपूर्ण है। तभी हम विकसित भारत के सपने को साकार कर पाएँगे।

कुछ धारणाओं के साथ, यह कल्पना की जा सकती है कि 2010 तक भारत की आबादी 1.2 अरब होगी। इसलिए स्थिर मूल्यों पर प्रति व्यक्ति आय 762 डालर होगी (जो पी.पी.पी.–'परचेजिंग पावर पैरिटी' अथवा समान क्रय शक्ति के आधार पर 3146 डालर है) और 2020 में 1.4 अरब आबादी पर 1540 डालर (पी.पी.पी. के आधार पर 6355 डालर) होगी। इसी प्रकार प्रति व्यक्ति घरेलू उत्पाद को भी आय–वर्गों के अनुसार प्रति व्यक्ति निर्धारित किया जा सकता है।

2020 में निम्नतम 10 प्रतिशत को ध्यान में रखते हुए प्रति व्यक्ति घरेलू उत्पाद 569 डालर मूल्य का होगा। और, चोटी के दस प्रतिशत वाले वर्गों के लिए 4369 डॉलर होगा, जिसका कुल मिलाकर औसत 1569 डॉलर होगा। न्यूनतम से उच्चतम वर्गों का औसत 1 : 7.7 होगा। निम्नतम से औसत होगा। 1 : 2.75 और उच्चतम का औसत होगा 1 : 2.78। न्यूनतम से उच्चतम तक का 1996 का अनुपात लगभग वही होगा। इसका सबसे बड़ा कारण प्रयोजनाओं में निहित अनुरेखता है। यहाँ यह बताना भी जरूरी है कि इस प्रकार के अनुपात अन्य देशों में पाए गए अनुपात के समान ही हैं।

यहाँ यह भी बता देना जरूरी है कि भारत में आय के विभाजन का जो ढाँचा 1960 और 1994 के बीच था, उसमें कोई खास बदलाव नहीं आया है। इस बारे में हम यह सिफारिश करना चाहेंगे कि इस अनुपात को और कम करना चाहिए। मगर, सवाल यह है कि ऐसा अनुपातों को और नीचे गिराए बिना कैसे मुमकिन हो सकेगा? महज आर्थिक अनुपात या नियंत्रण, राजस्व–सम्बन्धी नीतियों, या प्रौद्योगिकियों के बल पर सम्भव नहीं है। इसके लिये सामाजिक चेतना व उसे सक्रिय करने के लिए कुछ करने की भी जरूरत है। फिर, यह भी याद रखने की जरूरत है कि किसी सार्थक न्यायाधारित हल पाने के लिए अर्थव्यवस्था का सशक्त होना और सही मात्रा में सही प्रौद्योगिकियों के उपयोग का होना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

गरीबी के परिदृश्य में एक निर्णायक मानवीय पहलू भी जुड़ा है। इस बात की भी काफी सम्भावना है कि 2007–8 तक गरीबी पूरी तरह खत्म हो सकती है बशर्ते 1996 की 2128 डॉलर कीमतों को गरीबी की रेखा का आधार बना लिया जाए। व्यक्तिगत प्रयोज्य आय भी 1996 के 278 डालर के स्तर से बढ़कर 1717.1 डॉलर हो सकती है। अर्थव्यवस्था से जुड़ी अन्य विशेषताएँ भी उभर कर सामने आ सकती हैं, जैसे

- लगातार बढ़ रहा घरेलू बाजार
- वेतन की अर्थव्यवस्था का विस्तार
- स्व–रोजगार की बढ़ती हुई प्रवृत्ति
- औपचारिक क्षेत्र के विकास के बावजूद अनौपचारिक का विस्तार
- निर्माण–क्षेत्र और सेवा–क्षेत्र दोनों का एक–साथ विस्तार
- कृषि–क्षेत्र की आधुनिकता–ग्रामीण अर्थव्यवस्था में रूपात्मक परिवर्तन
- फसल–रहित आर्थिक गतिविधियों का बड़े पैमाने पर उभर कर आना
- छोटे और माध्यमिक उद्योगों में वृद्धि और पेशेवर उद्यमकर्त्ताओं और प्रविधिज्ञों के नेतृत्व में ऐसे उद्योगों का विकास
- आर्थिक क्रांति के एक युग का प्रारम्भ
- निर्माण, वित्त–निवेश और शोध व विकास के समाकलन में प्रौद्योगिकीय लहराव के संकेत

धातु–आधारित उद्योगों (स्टील, एल्यूमीनियम विशेष प्रकार की मिश्र धातुओं, सीमेन्ट, कार–निर्माण, इलैक्ट्रानिक्स, मानवीय ज्ञान और हुनरों (सॉफ्टवेयर, मीडिया, आर्थिक सेवाओं), विशेष प्रक्रिया से तैयार किए गए खाद्य–पदार्थ, औषधि और औषध–निर्माण–विज्ञान, आदि क्षेत्रों में भारत की शानदार प्रगति।

dN lkekftd lidrd

1991 में भारत में साक्षरता का 52 प्रतिशत सन् 2020 तक प्रायः 80 तक पहुँचने की आशा है। शिशुओं के जीने की अवधि में भी उल्लेखनीय वृद्धि होने की आशा है। बेहतर जीवन–शैली की आकांक्षा लिए युवाजनों की संख्या में काफी वृद्धि होगी। शिक्षित और हुनरमंद व्यक्ति भारी

rkfydk 1-4

Hkkjr 2020 dh ifjdYiuk

vk;&oxkZ d vuqlkj ?kjsyw mRikn vkj ifr O;fDr ?kjsyw mRikn dk foHkktu

आय–वर्ग	घरेलू उत्पाद (बिलियन डॉलरों में)				प्रति व्यक्ति घरेलू उत्पाद (बिलियन डॉलरों में)			
	1996	2000	2010	2020			1996	2000
2010 2020	12.47	16.1	33.7	79.1	130.1	158.8	281.9	569.2
निम्नतम 10%	16.02	20.9	43.8	102.6	169.2	206.0	365.7	738.5
अगला 10%	40.30	52.8	110.3	258.7	212.8	259.7	461.0	930.8
दूसरा 20%	52.60	68.9	144.0	337.9	278.8	339.0	601.8	1215.4
तीसरा 20%	70.30	92.1	192.4	451.2	371.1	452.8	803.7	1623.1
चौथा 20%	141.90	185.9	388.4	911.0	749.1	914.2	1622.7	3277.1
पाँचवाँ 20%	94.60	124.0	258.9	607.3	998.9	1218.9	2163.6	4369.4
सबसे ऊपर का 10%	333.0	436.4	911.72	2140.5	351.7	429.2	761.8	1538.5
कुल मिलाकर								

ukV % (1) 1994 में आय–वितरण के ढाँचे पर आधारित। (2) देखा गया है कि विकास और असमानता में सह–सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सकता। (3) चीन को छोड़कर, जिसके आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं, सब देशों में आय के वितरण का यही

संख्या में अपनी सेवाएँ देने के लिए उपलब्ध होंगे। इस बात की भी प्रबल सम्भावना है कि अधिकाधिक संख्या में महिलाएँ उद्यमकर्ताओं के रूप में तथा अर्थव्यवस्था से जुड़ी प्रवृत्तियों में भाग लेंगी।

हालांकि नगरों की संख्या आने वाले वर्षों में लगातार बढ़ेगी, तो भी ग्रामीणों और नगरवासियों के आपसी सम्बन्ध बढ़ते रहेंगे, आर्थिक और सामाजिक दोनों क्षेत्रों में। विश्व–अर्थव्यवस्था के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था के लगातार बढ़ते हुए एकीकरण में मद्देनजर नई पीढ़ी के भारतीयों द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं के प्रयोग, रहन–सहन की शैलियों और जीवन–मूल्यों आदि में भी काफी क्रांतिकारी परिवर्तन आ सकते हैं। जैसे–जैसे लोग ज्यादा खुशहाल होते जाएंगे, वैसे–वैसे वे पर्यावरण की भरपूर रक्षा करने के प्रति भी ज्यादा संवेदनशील, जागरूक, सक्रिय और सचेत होते जाएँगे। इस बात की भी जोरदार सम्भावना है कि भविष्य के भारतीय अपने स्वास्थ्य और खाने–पीने के मामलों में ज्यादा विवेक से काम लेंगे।

हमें यह भी नहीं भूलना होगा कि आर्थिक विकास, नगरीकरण और पश्चिम के जीवनमूल्यों से अधिकाधिक सम्पर्क में आने के कारण विदेशीकरण की समस्याएँ और अलग–अलग तरह के अंतर्द्वंद्व उभरेंगे। उनके समाधान के लिए हमें सामाजिक और सांस्कृतिक स्तरों पर कुछ सोचना और करना होगा। इस मामले में मीडिया तथा सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक संस्थाओं और विचारकों को विशिष्ट समाधान खोजकर लोगों में उनका प्रचार करना होगा, ताकि विदेशियों की गलत आदतें हमारी संस्कृति को प्रभावित न कर सकें। इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारे पूर्वजों की विज्ञान–सिद्ध परम्पराएं और संस्कार तथा उनका ज्ञान हमारे लिए बड़ा सहायक और उपयोगी सिद्ध होगा। नवीनतम सूचना–संग्रह संबंधी नई–नई प्रौद्योगिकियाँ हमें इस परम्परागत ज्ञान–विज्ञान को अक्षुण्ण रखने में बड़ी महत्वपूर्ण सिद्ध होंगी। देश के कोने–कोने में फैले मामूली लोगों के गैरमामूली तजुर्बे भी इस दिशा में काम आएंगे।

एक विकसित भारत के सपने को आर्थिक सुधारों तथा अन्य उपायों से साकार करने का प्रयास करते समय हमें नोबेल–पुरस्कार प्राप्त अर्थशास्त्री अमत्य सेन के निम्न कथन को हमेशा जेहन में रखना होगा :

''मुख्य मुद्दा है, सब लोगों को सब प्रकार के अवसर प्रदान करना। लेकिन, आज इन अवसरों को दिए जाने के बारे में समझौते किए जाते हैं, उनको निष्क्रिय बनाने के उद्देश्य से कानून बनाए जाते रहे हैं, नौकरशाही द्वारा नियंत्रण लगाए जाते रहे हैं। इस प्रकार के सब अवरोधों को समाप्त करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। बड़े पैमाने पर सामाजिक अवसर देने का काम महज 'बाजारो को आजाद' करके पूरा नहीं होगा। उसके लिए खास तौर पर, शैक्षणिक सुविधाओं और स्वास्थ्य रक्षा जैसी बुनियादी सुविधाओं का देशव्यापी विस्तार करके इन सुविधाओं को आमदनी और साधनों के भेदभाव के बिना सब भारतीयों को देना पड़ेगा। इसके लिए आवश्यक है ऐसी आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक योजनाओं का क्रियान्वयन, जो हर प्रकार की असमानताओं को समाप्त कर सके। जिस दिन ऐसा होगा उस दिन हमारे देश के करोड़ो लोग एक नए आजाद माहौल में जाकर देश को और ज्यादा खुशहाल और गतिशील बनाने में मददगार हो सकेंगे।''

आगामी अध्यायों में हम जिस परिकल्पना का उद्घाटन करेंगे, वह भारत में रहने वाले लोगों और उनके पास उपलब्ध साधनों के आकलन पर आधारित होगा। भारत की मूल शक्तियाँ उसके राष्ट्रीय और मानवीय संसाधनों में छिपी हैं। इस प्रौद्योगिकीय परिकल्पना का लक्ष्य अपने तमाम देशवासियों को सामाजिक और आर्थिक समान अवसर प्रदान करने का है, ताकि वे इन अवसरों से प्राप्त ऊर्जा को लगातार बढ़ाते हुए, भारत को दिनोंदिन अधिक उन्नत, प्रगतिशील और सशक्त बना सकें।

भारत की मूल शक्तियाँ उसके राष्ट्रीय और मानवीय संसाधनों में छिपी हैं। इस प्रौद्योगिकीय परिकल्पना का लक्ष्य अपने तमाम देशवासियों को सामाजिक और आर्थिक समान अवसर प्रदान करने का है, ताकि वे इन अवसरों से प्राप्त ऊर्जा को लगातार बढ़ाते हुए, भारत को दिनोंदिन अधिक उन्नत, प्रगतिशील और सशक्त बना सकें।

vkjs[k 1-2

ik|kfxd nf"V ls l'kDr Hkkjr dh dYiuk

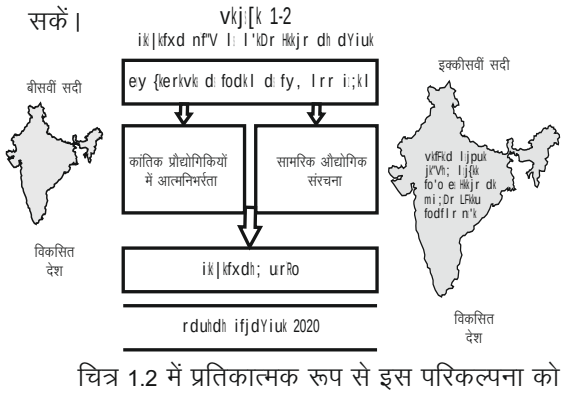

चित्र 1.2 में प्रतिकात्मक रूप से इस परिकल्पना को कुछ बोलते वक्तव्यों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। ये वक्तव्य प्रति व्यक्ति घरेलू उत्पाद, व्यापार और सामरिक शक्तियों को उजागर करने के अलावा आहार, स्वास्थ्य, शिक्षा, हुनर आदि क्षेत्रों में भारत

चित्र 1.2 में प्रतिकात्मक रूप से इस परिकल्पना को कुछ बोलते वक्तव्यों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। ये वक्तव्य प्रति व्यक्ति घरेलू उत्पाद, व्यापार और सामरिक शक्तियों को उजागर करने के अलावा आहार, स्वास्थ्य, शिक्षा, हुनर आदि क्षेत्रों में भारत की उपलब्धियों की ओर इशारा करते हैं, और इस ओर भी इशारा करते हैं कि किस प्रकार सब भारतीयों को अनेक सामाजिक व सांस्कृतिक अवसर प्रदान किए जा रहे हैं।

Hkkjr vkj fo'o

मैं इन सब विषयों तथा उनसे जुड़े मुद्दों की चर्चा समय–समय पर करता चला आ रहा हूँ। 22 फरवरी, 1998 को चंडीगढ़ में 'ट्रिब्यून ट्रस्ट' द्वारा आयोजित एक सभा में मैंने जो कहा था, उसके कुछ अंश नीचे प्रस्तुत कर रहा हूँ –

''हालांकि 'शीत–युद्ध' समाप्त हो गया है, तो भी चुने हुए दाँवपेंच की नीतियाँ अभी तक अपना काम कर रहीं हैं, और उनके माध्यम से विकसित देश विकासशील देशों पर सैनिक और आर्थिक दृष्टि से हावी होते जा रहे हैं। कई किस्म की प्रौद्योगिकियों को भारत जैसे विकासशील देशों की पहुँच से बाहर रखा जा रहा है।

''आज हमारे सामने दो मुख्य समस्याएँ हैं। एक ओर हमारे पड़ोसियों को खुलेआम अस्त्र देकर उन्हें ताकतवर बनाया जा रहा है, और दूसरी ओर गुपचुप उन्हें प्रक्षेपास्त्रों और न्यूक्लीय अस्त्र–शस्त्र के निर्माण की जानकारी प्रदान की जा रही है। हर ओर से ऐसे प्रयास भी किए जा रहे हैं, जिससे घटिया किस्म की प्रौद्योगिकी हम पर थोपी जा सके। और यह काम बड़े जोर–शोर से खूब ढिंढोरा पीटते हुए किया जा रहा है।

''सिर्फ एक ही हल है हमारे पास इस समस्या का सामना करने का–हमें पूर्णतया आत्मनिर्भर होकर, अपनी निजी प्रौद्योगिकियों को लगातार विकसित करते रहना होगा।

''अपने देश के चारों ओर नजर डालने पर हमें क्या दिखाई देता है? दिखाई देता है एक डरावना नजारा। शस्त्रों की संख्या को कम करने की घोषणा करने वाली कई संधियों पर दस्तखत करने वाले मुल्क, हमारे पड़ोसियों को खतरनाक और विनाशकारी हथियार प्रदान करके, उनके भंडार को दिन दूना, रात चौगुना कर रहे हैं।

''सर्वनाशी हथियारों का यह जखीरा क्या इशारा कर रहा है, इस पर हम सबको जल्दी से जल्दी, संजीदा होकर सोचना होगा–इन हथियारों के विकास और उद्भव के बारे में, हमारे देश के लोगों की जान लेने में समर्थ उस युद्ध के तौर–तरीकों के बारे में, जिसका खतरा हमारे ऊपर मँडरा रहा है।

''आदमी का इतिहास इस बात का साक्षी है कि शुरूआती दिनों में लड़ाई आमने–सामने होती थी। बीसवीं सदी में, 1990 के आसपास तक लड़ाई उन हथियारों की मदद से होती थी जिन्हें युद्ध भूमि तक लाया जाता था। इन हथियारों में जमीन, समुद्र और हवा पर इस्तेमाल होने वाले टैंक, तोपें, हवाई जहाज, पानी के जहाज, पनडुब्बियाँ और न्यूक्लीय अस्त्र–शस्त्र और टोही हवाई जहाज आदि शामिल हैं। जब महाशक्तियों की टक्कर और आपसी प्रतियोगिता अपने चरम पर थी, तब परंपरागत, न्यूक्लीय और हथियारों का निर्माण भी अपने चरम पर था।

''1990 के बाद से इस युद्ध का एक नया पहलू सामने आया। दुनिया में आर्थिक मोर्चे पर जंग शुरू हुई। यह जंग उच्च प्रौद्योगिकी के माध्यम से बाजार की ताकतों को अपने नियंत्रण में लाने के कौशल–रूपी हथियार के इस्तेमाल से लड़ी जा रही हैं। इस जंग में शामिल देशों के नाम हैं–अमरीका, जापान, ब्रिटेन, फ्रांस,

जर्मनी, दक्षिण–पूर्व एशिया के कुछ देश आदि। जंग की प्रेरक शक्ति है–एक खास किस्म के सिद्धांत पर आधारित ज्यादा–से–ज्यादा दौलत पैदा करना।

''आज हमारे सामने सबसे अहम सवाल यह है कि एक राष्ट्र के रूप में, पीछे से लड़ी जा रही, नए किस्म की जंग में, कैसे कामयाब हों। आर्थिक और सैनिक प्रभुत्व को दांवपेंच से हासिल करके आज राष्ट्रीय स्तर पर प्रौद्योगिकी ही आर्थिक विकास की कुंजी और प्रेरक शक्ति है। अतः हमें अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र में राष्ट्रीय सम्पत्ति को उत्पन्न करके अपनी स्पर्धात्मक तीक्ष्णता को सान चढ़ाते रहना होगा, अपनी खुद की प्रौद्योगिकियों को लगातार विकसित करते हुए। इसलिए, आज की हमारी सर्वोपरि आवश्यकता है–भारत को सबसे ताकतवर देशों में से एक बनाना–प्रौद्योगिकी के विकास के माध्यम से।''

jk"V dh fy, ifjdYiuk

राष्ट्रों का निर्माण कल्पनाशक्ति को उद्देश्यमूलक दिशा प्रदान करके तथा पीढ़ियों के सतत और जोशीले प्रयासों के बल पर किया जाता है। एक पीढ़ी अपनी मेहनत के नतीजों को दूसरी पीढ़ी को सौंपती है, और वह इस मिशन को और आगे बढ़ाती है। चूँकि हर पीढ़ी के लोगों के पास राष्ट्र के बेहतर भविष्य के अपने–अपने सपने होते हैं, अपनी–अपनी आकांक्षाएँ होती हैं, इसलिए वह उन्हें समग्र राष्ट्रीय परिकल्पना में जोड़ देती है, अपने योगदान के रूप में। और, यह क्रम इसी प्रकार जारी रहता है और राष्ट्र सीढ़ी–दर–सीढ़ी चढ़कर, स्वतः को नई शान, नए लाभ और नई शक्तियाँ प्राप्त करता रहता है।

igyh ifjdYiuk%Hkkjr dh vktknh

कोई भी संस्था, समाज या राष्ट्र हो, बिना किसी परिकल्पना के उन्मत्त सागर की लहरों पर यात्रा करते हुए उस जहाज के समान हैं, जिसके पास न कोई दिश है, न कोई उद्देश्य या लक्ष्य। बिना किसी सुनिश्चित दिशा के वह कहीं नहीं पहुँच पाता, और भटकता रहता है। परिकल्पना की स्पष्टता ही लोगों को सदा उनके लक्ष्य तक पहुँचने और उसे प्राप्त करने की प्रेरणा बनी रहती है।

हमारी पिछली पीढ़ी उन प्रतापी स्वाधीनता–सेनानियों की पीढ़ी थी, जिन्होंने महात्मा गाँधी तथा अन्य नेताओं के ओजस्वी नेतृत्व में आजाद भारत की परिकल्पना की थी, उसका सपना देखा था। राष्ट्र के लिए भारत के लोगों द्वारा देखा गया यह पहला सामूहिक सपना था, परिकल्पना थी। यह सपना लोगों के दिल–दिमागों में उतरा, और उसी की प्रेरक शक्ति ने लोगों को आजादी के आंदोलन में सामूहिक रूप से शामिल होने का जोश प्रदान किया। जीवन के हर क्षेत्र से जुड़े इस सपने के प्रति समर्पित लोगों के संयुक्त प्रयास ने ही देश का आजादी दिलाई।

nljk liuk%fodfl r Hkkjr dk

अगली पीढ़ी (जिसका मैं भी एक हिस्सा हूँ) ने भारत को, पूरी ताकत के साथ, आर्थिक, कृषीय और प्रौद्योगिकीय विकास के पथ पर अग्रसर किया। लेकिन, भारत आज भी एक लम्बे समय से विकासशील देशों की कतार में खड़ा है। आइए, अब हम सब मिलकर, विकसित भारत का सपना देखें, उसकी परिकल्पना करें। e>s ijk fo'okl gS fd Hkkjr esa fodfl r n'kk dh drkj esa [kMs gksu dh {kerk ekStnw g] vkj mldk ;g liuk vxys 15&20 o"kkas esa ijk gks ldrk gSA

fodfl r n'k dh gSfl ;r

एक मामूली आदमी की नजर में विकसित देश की हैसियत क्या मायने रखती है? इसके मायने होंगे ऐसी स्थिति, जिसके आ जाने पर, हमारी अर्थव्यवस्था में जोरदार परिवर्तन होगा और वह दुनिया की सबसे ज्यादा सशक्त और लाभप्रद अर्थव्यवस्थाओं में से एक होगी। उसकी सार्थकता भारत जैसे देश के लिए यह होगी कि देश के लोगों की सेहत बेहतर होगी, सबको ऊँचे दर्जे की शिक्षा मिलेगी, देश की सुरक्षा इतनी मजबूत हो जाएगी कि कोई मुल्क उसकी तरफ आँख उठाने की हिम्मत भी नहीं कर पाएगा। कई महत्वपूर्ण और बड़े क्षेत्रों में उसकी मूल समर्थता और क्षमता उच्च कोटि की वस्तुओं का निर्माण और उत्पादन करने लायक हो जाएगी। उनका अधिकाधिक निर्यात करके देश के लोग ज्यादा–से–ज्यादा खुशहाल और संतुष्ट हालत में दिखाई देंगे। इस सवाल के जवाब में कि इन उपलक्ष्यों को हासिल कराने वाली कड़ी कौन–सी है, हम यह कह सकते हैं कि वह होगी राष्ट्र की प्रौद्योगिकीय शक्ति, जिसे इस विकसित हैसियत को पाने की कुंजी माना जा सकता है।

ge a viu 'kfDr&L=kr dk vkj vf/kd lnK djuk gkxk

अगला सवाल, जो जेहन में आता है, वह यह है कि क्या इस सपने को साकार कर, स्थायी रूप से कायम रखा जा सकेगा? इस सवाल के जवाब में हम यही कहेंगे कि इस सपने को चिरस्थायी रूप से साकार रखने के उद्देश्य से हमें अपनी राष्ट्रीय अवसंरचना को बड़े पैमाने पर, चौतरफा सुदृढ़ करना होगा। और इसके लिए हमें अपने प्रचुर प्राकृतिक स्त्रोतों और गुणी वैज्ञानिकों और शिल्प–विज्ञानियों को इस अति–महत्वपूर्ण कार्य में लगाना होगा। तभी, हम अपने शक्ति–स्त्रोत को और अधिक सुदृढ़ और सक्षम कर सकेंगे। अधिक–से–अधिक मानव बल की सेवाएँ स्वास्थ्य–सुरक्षा, सेवा–क्षेत्रों और इंजीनियरिंग सामान के क्षेत्रों को और अधिक कारगर बनाने के लिए प्राप्त करनी होंगी। विशेष रूप से हमें मूल क्षेत्रों जैसे कृषि–उत्पादन, खाने की वस्तुओं को विभिन्न तरीकों से उपयोगी बनाने की प्रक्रिया, द्रव्यों और पदार्थों जैसे क्षेत्रों और कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर, जैव–प्रौद्योगिकियों जैसे नए क्षेत्रों के विकास पर अपना ध्यान केंद्रित करना होगा। इन सब क्षेत्रों को सक्रिय करने वाला समान तत्व है–मानव बल। उसके बिना देश में आमूल क्रांति लेने की आशा करना बेकार है। इसलिए, हमें मानव बल के समुचित विकास पर भी इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पर्याप्त ध्यान देना होगा।

2020 ls vkxs

सन् 2020 तक भारत के विकसित राष्ट्र बन जाने की हैसियत पाने के बाद भी हमें अपनी सफलता से संतुष्ट नहीं रहना होगा। देश के सब लोगों को ज्यादा–से–ज्यादा खुशहाल बनाने की हमारी कोशिशों का कभी कोई अंत नहीं होगा। विकसित भारत के हमारे सपने के साथ समय का तत्व भी जुड़ा है। बहुविध योग्यताओं और हुनरों के ज्ञात तथा प्रज्वलित मस्तिष्कों वाले लोग ही सुदूर भविष्य की ऐसी झाँकी पाने में समर्थ हो सकते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि हमारे लोगों का आशानुकूल विकास होना सम्भव है, बशर्ते कि हम अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए स्थिर मति और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ते रहें। यही रास्ता अपना कर ही हम अपने देश के लोगों को आजीवन इस क्रांतिपूर्ण परिवर्तन से उत्पन्न लाभ दिलाते रहेंगे। उन्हें यह सुधार आँकड़ों की नजर से नहीं, खुद अपनी नजर से दिखाई देते रहने चाहिए।

dk;Zokgh

दूसरे शब्दों में इस सपने या परिकल्पना को समूचे राष्ट्र का सपना या परिकल्पना बन जाना चाहिए। वर्तमान सरकार या भावी कोई भी सरकार आए या जाए मगर यह सपना चिरस्थायी हो जाना चाहिए। इस सपने को साकार करने के लिए हमें कई कार्यवाहियाँ करनी पड़ेंगी। इन कार्यवाहियों का एक महत्वपूर्ण तत्व होगा–अंतर्जात प्रौद्योगिकीय शक्तियाँ। देखा जाए तो सब प्रौद्योगिकियाँ मूलतः किसी मानवीय ज्ञान या अनुभव को ही अभिव्यक्त करती हैं, और समर्थक परिस्थितियों में आगे के सृजनात्मक विकास करने में समर्थ होती हैं।

हमने कई बार अपने से और दूसरों से यह सवाल किया है कि भारत ने, जिसका इतिहास हजारों वर्ष पुराना है, क्यों अपनी सीमाओं में वृद्धि करने और दूसरे देशों पर हावी करने का प्रयास नहीं किया? जब इस बारे में अनेक विशेषज्ञों ने, जिनसे हमने बात की, हमें बताया कि भारत के मानस में कुछ ऐसी विशिष्टताएँ हैं, जो इस बात का संकेत देती हैं कि भारत की सोच सदा से ज्यादा सहिष्णुता, आत्म–अनुशासन, बदला लेने से बचने, विदेशियों को शरण देने में लचीलापन, उच्चतम परम्परा के नियम का पालन, साहसिक बनने के स्थान पर व्यक्तिगत सुरक्षा पर बल देने की रही है। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि इन विशिष्टताओं के मेल ने किसी सपने को साकार करने या किसी परिकल्पना को क्रियान्वित करने की योग्यता कम कर दी है। इन रायों की झाँकियाँ हम आगामी अध्यायों में पेश करते रहेंगे।

हमारा पक्का विश्वास है कि एक राष्ट्र के रूप में हम लोगों को निंदकता की आत्मघाती प्रवृत्ति को त्याग देना चाहिए और देश के भविष्य की खातिर, एक ठोस कार्यवाही की शुरूआत कर देनी चाहिए। इस दिशा में भारत ने पहली ठोस कार्यवाही 1857 में की थी, जब देश के पूरी तरह आजाद होने के बीज बोये गए थे। अब दूसरी ठोस कार्यवाही हमें करनी है, देश को पूरी तरह विकसित देश बनाने की। हमारी सफल कार्यवाही हमें अपने विकसित देश के सपने को साकार करने के अधिक निकट लायेगी। शायद, आज से एक दशक बाद, हमारे मामले में सबका फैसला यही हो कि हम अभी तक जरूरत से ज्यादा परम्परावादी हैं, जरूरत से ज्यादा सावधान हैं। हमें तब और ज्यादा खुशी होगी यदि हमारी कार्यवाही के बारे में कहा जाए कि हम भारत को पूरी तरह विकसित बनाने की दिशा में और ज्यादा साहसिक हो सकते थे, ज्यादा फुर्ती दिखा सकते थे।

हमने यह अध्याय जब लिखा था, उस समय 11 मई, 1998 के न्यूक्लीय परीक्षण नहीं हुए थे। तालिकाओं में दिखाए गए आँकड़े आदि इस कारण बदल सकते हैं, लेकिन हमने अभी तक जो विश्वास व्यक्त किया, उसमें किसी तब्दीली के होने की सम्भावना नहीं है। जो भी हो, वे आँकड़े परिवर्तन की दिशाओं के संकेतक मात्र ही हैं। इन परीक्षणों पर देश–विदेश की मीडिया में जो प्रतिक्रियाएँ हुईं, उन्हें हमने देखा है। हमें उनके बारे में अनेक भारतीयों से बात करने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ है। इन वार्ताओं के दौरान, एक खास बात जिसने मेरा ध्यान बार–बार खींचा, वह यह थी कि पचास से अधिक आयु के लोग, खासतौर पर ऐसे लोग जो सरकार, उद्योग और शिक्षा के क्षेत्र में उच्च पदों पर आसीन हैं, समस्याओं का सामना करने में काफी हिचकिचाते हुए नजर आए। उनका कहना था कि भारत जो भी कार्यवाही करे, उसमें उसे अन्य देशों का समर्थन अवश्य प्राप्त होना चाहिए। यह एक ऐसे देश के लिए, जिसने हाल ही में आजादी की पचासवीं सालगिरह मनाई थी, और जो हमेशा आत्म निर्भरता की बातें करता रहता है, अच्छा संकेत नहीं है।

हम न दूसरों के आतंक की भावना से पीड़ित हैं, न अलगाववाद की भावना से, लेकिन यह बात हर भारतीय के मन में बैठ जानी चाहिए कि दुनिया का कोई भी देश, हमारा हाथ अपने हाथों में लेकर हमें विकसित देशों की कतार में ले जाकर वहाँ बैठाने वाला नहीं है। हाल ही में किए गए न्यूक्लीय परीक्षण उन लगातार किए गए प्रयासों की अंतिम परिणति थे, जो देश अपनी सुरक्षा की खातिर करता आ रहा था। जब ये परीक्षण मई 1998 में किए गए

तब भारत को कुछ विकसित देशों द्वारा भारत के विरूद्ध लगाए गए प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा था। ऐसा करते समय इन देशों ने जानबूझकर विश्वव्यापी विपणन, विश्वव्यापी वित्तीय प्रणालियों और विश्व–भर को गाँव बना देने की कल्पना खुद अपने हाथों ध्वस्त कर दी। फलस्वरूप भारत को अपनी मौलिक अर्थव्यवस्था विकसित करनी पड़ी।

ऐसा नहीं है कि इन चंद विकसित देशों की नाराजगी सिर्फ भारत द्वारा न्यूक्लीय परीक्षणों के कारण ही है। कल यदि 'सॉफ्टवेयर' के निर्यात में सारी दुनिया के बाजार के अच्छे–खासे भाग पर भारत कब्जा कर ले, और इस क्षेत्र में तीसरे, चौथे या पाँचवे नंबर पर आ जाए, तब हमें दूसरे किस्म की प्रतिक्रियाओं का सामना करना पड़ेगा। आज 'सॉफ्टवेयर' या सूचना प्रौद्योगिकी के बाजार में भारत का योगदान बहुत मामूली है। इसी प्रकार, यदि भारत गेहूँ, चावल या 'एग्रोफूड' का बड़ा निर्यातक बनकर चार या पाँच बड़े निर्यातकों के बाजार को चुनौती देने में कामयाबी हासिल कर ले, तो बहुत–से मुद्दे खड़े हो जाएँगे, जिनमें वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा में लिखी 'फायटो–सेनिटरी स्पेसीफिकेशन' और विश्व के वायुमंडल की गर्मी बढ़ाने में भारत के योगदान जैसी बातों का शुमार होगा। बहुदेशीय प्रणालियाँ, जो इस मुद्दे को लेकर बनाई गई हैं, सिर्फ गैट (GATT) और बहुदेशीय संधियों के कागजों तक ही महदूद हैं। भारत इन सन्धियों पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य था, हालांकि हमारे प्रतिनिधियों को अपने हितों की रक्षा के लिए और अधिक चौकस रखने की जरूरत थी। हमारे पास जो कुछ है, उसी के आधार पर हमें दूसरों का सामना करना है। हमें बहुदेशीय खेल खेलना है, विदेशी पूँजी को अपनी ओर आकर्षित करना है, संयुक्त उद्यमों की शुरूआत करनी है, और एक सक्रिय अंतरराष्ट्रीय विकसित देश की हैसियत हासिल करनी है। इस सम्बन्ध में हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि अपना लक्ष्य ऊँचा रखने वालों को, जरूरत पड़ने पर, कभी–कभी 'एकला चलो रे' के मार्ग पर भी चलना पड़ जाता है।

दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों और जापान को अनेक आर्थिक और सामाजिक समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। हर देश अपने–अपने ढंग से अपनी समस्याओं के हल खोज रहा है। सबके तरीके जुदा–जुदा हैं। इनमें से कुछ कामयाब हो जाएँगे और कुछ नहीं होंगे। हमें विश्वास है कि आने वाले दिनों में भारत एक महान विकसित देश के रूप में उभरेगा, और उसके सब निवासी इस यादगार कोशिश में तो भागीदार होंगे ही, उसकी खुशहाली में भी बराबर के भागीदार होंगे। इस बारे में हम इसलिए भी आशान्वित हैं कि बुजुर्गों में से भी ऐसे काफी लोग हैं जो इस कोशिश से जुड़ी चुनौतियों का सामना करने की हिम्मत और उमंग रखते हैं। अधिकांश भारतीय साहसिक जोश से पूर्ण भारत को देखना पंसद करते हैं। उनमें, युवा पीढ़ी के ऐसे युवाजन भी हैं जो इस पेचीदा मुहिम में हिस्सा लेने को पूरे जोश के साथ तैयार हैं। उनमें से कई को भारतीय परंपरागत प्रणालियों से, जो निजी क्षेत्र में भी हैं, और सार्वजनिक क्षेत्र में भी हैं, शासन में भी हैं, और शिक्षा के क्षेत्र में भी हैं, दो–दो हाथ करने को तैयार रहना है। उन सब मुश्किलों को झेलने के लिए भी तैयार रहना है, जिनके आने की उन्हें पूर आशा है। उनके इस दृढ़–संकल्प में ही, हमारे दूसरे सपने के साकार होने की आशाएँ छिपी हैं।

lkHkkj %
Hkkjr 2020 uo fuek.k dh :ijs[kk
i-l- 13 ls 36 rdA
Mk- ,-ih-ts- vCnqy dyke
okb-lnj jktu

सेवा में,

नाम ....

पता ....

....

....

साहित्य में दलित चेतना

साहित्य समाज का दर्पण होता है। जो कुछ समाज में घटित होता है उसका प्रभाव साहित्य में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। साहित्य में सबसे पहले ''दलितों'' पर अपनी लेखनी प्रेमचन्द ने चलाई। इन्होंने चमार, डोम, बढ़ई, लुहार अनेक जातियों का सूक्ष्म विवरण अपने साहित्य में किया। अछूत होना कितना पाप है इस देश में, इससे पूरे देश को अवगत करवाया। इसके बाद ग्रामीण जीवन का सूक्ष्म अध्ययन साहित्य में प्रेमचन्द के पश्चात शिवप्रसाद सिंह ने किया। इन्होंने भी दलित जातियों कोली, डोम, नट, चमार, धोबी, बढ़ई, जुलाहा आदि का सूक्ष्म दृष्टि से विवेचन अपनी कहानियों में किया है, कि किस प्रकार समाज में इस जाति को अछूत माना जाता है। यहाँ तक कि उच्च जाति के लोग अपने घरों के आस–पास भी नहीं मडराने देते। इन्हे हर–पल ब्राह्मण राजपूतों का डर लगा रहता है और जातियों में चाहे चमार, धोबी, कोली, चूहड़े, कोई भी हो उन्हे व्यवसाय के अनुसार काम करने को मिलता है। और वह अपना भरण पोषण भी इसी व्यवसाय से करते हैं। खाली पेट एक गाँव से दूसरे गाँव घूमते हैं। कुएँ पर कोई जाने नहीं देता, स्टेशनों पर दहाड़ी(मजदूरी) करने के लिए उन्हे कोई नहीं पूछता मुसहर चमार गरीब हैं सही पर उन्हे करने को नीचा, ऊँचा काम तो मिल जाता है। हम कहाँ जाय सरकार हमारी देह में तो तो ऐसी छूत भरी है कि कोई खाद गोबर फैंकने का काम भी नहीं करने देता। इस प्रकार दलित डोम गाँव में जाकर ऊँची जाति के घरों में शादी ब्याह में जूठी पत्तलें इक्ट्ठी करने का काम करते हैं। और इन्हीं झूठी पत्तलों से जूठा खाना खाकर ही अपना पेट भरते थे। भारत देश में दलितों की इससे बड़ी क्या विडम्बना होगी, कि एक मनुष्य को कुत्तों के समान पत्तल चाटने तक मजबूर किया जाता है। कहानी में फूली और उसकी माँ का दरिद्रिक चित्रण इस प्रकार है। गली के मोड पर या किसी गन्दे घूरे के पास लोगों की पहुँच से परे ताकि अनजाने में भी कही किसी पर उनकी छाया न पड़ जाये। फूली अपनी माँ के पास चिपकी हुई बैठी रहती, जीवन वालों की पातें बैठती खाकर उठती बारी या नाई जूठे पत्तल उठाकर फूली और उसकी माँ के सामने फेंक देते फूली बगल से सौटा खींचकर चौकन्नी खड़ी हो जाती पत्तल पर टूट पड़ने के लिए उतारू कुत्तों को वह सोटा हिला–हिलाकर धमकती और उसकी माँ जूठे पत्तलों से पूड़ियों के टुकड़ों, बची खुची तरकारियों, मिठाइयों के चूरे और दही चीनी के सीरे को काछ–काछकर अलग–अलग हंडियों मे जमा करती जाती। जय हो जजमान। तनिक डोम वाँ के एक टुकड़ा सरकार।'' दलितों के मन में अर्न्तमन से सदियों से डर घुसा हुआ है। यह डर रूढ़वादी समाज की व्यवस्था की देन है। इसीलिए आज भी एक दलित अपने विचारों को खुल कर नहीं कह पाता, अपने अधिकारों के प्रति आवाज नहीं उठा पाता, आज भी स्वाधीनता के पाँच दशक बाद भी गाँव का एक अनपढ़ सवर्ण भी दलितों का शोषण करता है क्योंकि वह निडर है। अर्थात दलितों को अपनी मजूरी तक नहीं मिलती, और न ही उच्च वर्ग के डर के कारण वह अपनी मजूरी ले जाते हैं। एक छोटा कीड़ा भी दबने के भय से प्रतिक्रिया करता है। दलित वर्ग के लोग सदियों से दबाये जाते हैं, परन्तु कभी उफ तक नहीं किया। क्या इनमें जीव का संचार नहीं है। परम पूज्नीय बाबा साहब डा० भीमराव अम्बेडकर जो स्वयं दलित थे, जिन्होंने दलित होने की पीड़ा को सहन किया था, इन्होने पूरी तरह से सनातनी व्यवस्था पर चोट की, लोगों के आत्म सम्मान को जगाया। उन्हे यह सोचने पर मजबूर किया कि आदमी सभी एक है, हर आदमी की अपनी इज्जत मान मर्यादा और सामाजिक प्रतिष्ठा होती है।

दलित महिला को सजग होकर अपने अधिकारो व अपने ऊपर हो रहे शोषण का डटकर मुकाबला करना होगा। हमें ऐसी व्यवस्था के विरूद्ध लड़ना है जो श्रम के महत्व को नकारती है, कोई चमड़े का काम करता है तो वह अछूत है, और जो निष्क्रीय होकर दूसरों के श्रम की कमाई खाता है वह पूज्य है कोई खेत में खून पसीना बहाता है सारी दुनियाँ की क्षुदा की तृप्ति करता है वह मजदूर है जो अस्पृश्य है और निष्काम बैठा है वह मालिक है शोषण कर्ता मालिक और कार्यकर्ता मजदूर जिसे उसके श्रम का मूल्य भी नहीं दिया जाता है।

अतः दलित चेतना को पूर्ण रूप से उजागर करने के लिए हमें अपने बच्चों व समाज को जैसे भी हो शिक्षित करना पड़ेगा। शिक्षा का तात्पर्य है, सोचने की क्षमता पैदा करना, आत्मसम्मान को जगाना। शिक्षा के ही संगठन सम्भव हैं। संगठन को मजबूत बनाने के लिए रूढ़वादी व्यवस्था से लड़ने के लिए मजबूत प्रगतिशील संगठन की आवश्यकता है। संगठन से शक्ति होती है, संगठन में आवाज होती है, संगठन से ही शक्ति मिलती है।

lkHkkj %
f'kojke flag lkxj
lh&411] g"k fogkj] cnjiqj] ubZ fnYyh
lgkÉ C;jks phQ fnYyh inns'k